गीताजंली का इन्टरव्यु

सतीश कुमार कश्यप
संदेशवाहक

रेलवे स्टेशन के समीप से गुजरते समय हमारी भेंट अचानक गीताजंली रेलगाड़ी से हो गई । पेश है उससे किया गया इन्टरव्यू -

प्रश्न - तुम्हारा नाम - हमने पूछा
उत्तर - जी गीतांजली, शरमाते हुए रेलगाड़ी बोली.
कहाँ से आई हो ? जी मुम्बई से ।
अभी कहाँ जा रही हो ? कलकत्ता ।
कहाँ तक पढ़ी हो ? जी हमने पढ़ाई नहीं की ।
तुम्हे पता नहीं हर किसी को पढ़ना चाहिए,
पता है लेकिन वह तो मनुष्यों के लिए जरूरी है ।
ओह ! माफ करना किन्तु तुम थोड़ा बहुत पढ़ना तो जानती ही होगी,
जी हाँ, चलते समय स्टेशनों के नाम वगैरह पढ़ लेती हूँ ।
अच्छा यह बताओं तुम्हारे रिश्तेदार भी है ,
जी हाँ, टी०टी०,एस०एम०,हिमसागर आदि मेरे रिश्ते में आते हैं ,
यह बताओ तुम्हारी शादी हो गई, जी हाँ ।
तुम्हारे पति कहॉ है ?
वह सामने इंजन के रूप में खड़े हैं ।
तुम्हारे बच्चे, वो मेरे पीछे बोगियों के रूप में खड़े हैं ।
तुम्हारे नजदीकी रिश्तेदार कौन-कौन से हैं ?
बड़े शहरों के प्लेटफार्म मेरे नजदीकी रिश्तेदार है ।
सुना है तुम बहुत ज्यादा काम करती हो,
ही-ही-ही यह तो मेरा फर्ज है, जहाँ तक मेरा ख्याल है
हर किसी को मेरी ही तरह कार्य करना चाहिए ।
अच्छा अपनी बहन राजधानी के बारे में कुछ कहोगी,
राजधानी,ना बाबा ना, वह तो बहुत घंमड़ी है,
दिल्ली से बंगलौर क्या जाती है, मानो हवा से बातें करती जाती है
क्या तुम उससे कभी मिली हो ?
हाँ ६ महीने पूर्व जब मेरी चचेरी बहन मालगाड़ी का पैर फिसल गया था,
तब हम अनेक बहने ५ -६ घंटे देरी से चल रही थी,
तभी वह घंमडी हमें नागपुर के पास मिली थी,
क्या राजधानी तुम्हे समय से नहीं मिलती ?
नहीं कभी नहीं ,और मालगाड़ी,
एक हो तो बताऊ लेकिन यह बात सही है,

कि मेरी सभी मालगाड़ी बहनें एकदम भोली एवं सीधी है।
जिसका पटरी से पैर फिसल गया था उसने भी चूँ तक नहीं की ।
गीतांजली जी - आपका मतलब मैं समझा नहीं,
अजी समझना क्या है ? राजधानी के पैर में मोच भी आ जाये तो,
गार्ड रूपी डाक्टर टार्च लेकर उसे आगे से पीछे तक टटोलने लगते हैं,
जब वह शहजादी किसी प्लेटफार्म पर रूकती है,
तो उसके आगमन की सूचना पहले ही दूर-दूर तक भेज दी जाती है।
यात्रियों के विषय में तुम्हारी क्या राय है ?
यात्रियों का मुझे सदैव स्नेह मिला है,
मेरी अन्य बहनों की तरह मुझे भी यात्री सफर के लिए उत्तम मानते हैं,
तुम्हारा मतलब है किसी यात्री से तुम्हें कोई भी शिकायत नहीं मिली,
शिकायत है उन अनगिनत यात्रियों से,
जो नियमों का पालन न करते हुए नाहक मेरी जंजीर को खींचते हैं,
जिससे मुझे कहीं भी मजबूरन रूक जाना पड़ता है।
इसके अतिरिक्त मनुष्यों से तुम्हारी और काई शिकायत भी है,
जी हाँ प्रायः विद्यार्थी या अन्य लोग जलसे जुलूसों के लिए मेरा ही सहारा लेते है,
क्योंकि मैं बड़े-बड़े महानगरों से विशेष रूप से जुड़ी हूँ।
इससे तुम्हे क्या तकलीफ है ?
वे तो अपनी माँगे सरकार के समक्ष ले जाते हैं,
यहीं तो मुसीबत है वे लोग हजारों की तासदाद में होते हैं,
वे मेरे भीतर-बाहर और ऊपर तक इस कदर भर जाते हैं ,
जैसे मैं एक मालगाड़ी हूँ, तब मेरा दम घुटने लगता है।
गीताजंली फिर बोली आपका संस्थान
राष्ट्रीय स्तर का है, अतः मेरी पीड़ा को
" प्रवाहिनी" पत्रिका में छपवा देना,क्योंकि
सभी प्रदेशों के वासी अगर उत्तम आचरण
करेंगे तो मुझे भी अपने कार्य
के निष्पादन में आसानी होगी।

धन्यवाद !

***